900 कारीगरों ने की कालीन की बुनाई

मिर्जापुर व भदोही जिलों के कारीगरों को बनाने में लगे 10 लाख घंटे

नई दिल्ली। नए संसद भवन के लिए कालीन बनाने में उत्तर प्रदेश के भदोही व मिर्जापुर जिलों के करीब 900 कारीगरों को लगाया गया था, जिन्होंने लगभग 10 लाख घंटे में 35,000 वर्ग फुट क्षेत्र में फैले दोनों सदनों के लिए कालीन की बुनाई की। ये कालीन संसद भवन में लोकसभा और राज्यसभा के फर्श की शोभा बढ़ा रहे हैं। लोकसभा और राज्यसभा के कालीनों में क्रमशः राष्ट्रीय पक्षी मोर और राष्ट्रीय पुष्प कमल के उत्कृष्ट रूपों को दर्शाया गया है। नए संसद भवन के लिए कालीन तैयार करने का जिम्मा 100 साल से अधिक पुरानी कंपनी 'ओबीटी कार्पेट' को दिया गया था। एजेंसी/ब्यूरो

राज्यसभा में उपयोग किए गए रंग मुख्य रूप से कोकम लाल रंग से प्रेरित हैं और लोकसभा में हरे रंग का प्रयोग किया गया है।

बुनकरों ने लोकसभा तथा राज्यसभा के लिए 150 से ज्यादा कालीन तैयार किए और फिर उनकी वास्तुकला के मुताबिक अर्ध-वृत्त के आकार में सिलाई की गई। उन्होंने कहा, बुनकरों को 17,500 वर्ग फुट में फैले हर सदन के लिए कालीन की बुनाई करनी थी। - **रूद्र चटर्जी, अध्यक्ष, ओबीटी कार्पेट**

- डिजाइन टीम के लिए यह एक अत्यंत चुनौतीपूर्ण काम था, क्योंकि उन्हें कालीन को अलग-अलग टुकड़ों में सावधानी से तैयार कर जोड़ना था।
- कालीन को जोड़ते समय यह भी सुनिश्चित करना था कि बुनकरों की कलात्मकता बनी रहे और ज्यादा से ज्यादा लोगों की आवाजाही के बावजूद कालीन खराब न हो।

60 करोड़ से अधिक गांठें बुनी गईं

कालीन बनाने के लिए प्रति वर्ग इंच पर 120 गांठों को बुना गया। इस तरह कुल 60 करोड़ से अधिक गांठें बुनी गईं। कोरोना महामारी के बीच 2020 में यह काम शुरू किया गया था। सितंबर 2021 तक शुरू हुई बुनाई की प्रक्रिया मई 2022 तक समाप्त हो गई थी, और नवंबर 2022 में इसे बिछाए जाने का काम शुरू हुआ।